

सोमस्य मूरा अमूरः RV. 4,26,7. मूरा अमूर न वयं चिकित्वा मक्त्विममि
त्वमङ्ग विवसे 10,4,4. 46,5. मा ते अमावसो यथा मूरसं इन्द्र सख्ये वावतः ।
नि पदमा सचा मृते 8,21,15. पर्यस्तं नहि मूर मायः 10,93,13. मा त्वा
मूरा अविष्यवो मापहस्वान् आ देभन् 8,43,23. जीर्वा मूरः (= जया मूः
Schol.) PAÑKAV. Br. 25,17,3. Wird zu 2. मूर gehören: *geistig gebrochen*,
— *stumpf*. Vgl. अमूर, das hiernach *scharfsinnig* bedeutet, und अमूर, wenn dies nicht geradezu andere Aussprache für अमूर ist.

2. मूर् (von मू = मीच् adj. *drängend, stürmisch*: सुसंमृष्टसो वृषभस्य
मूरः (Indra's Rosse) RV. 3,43,6. = मारक SĀJ.

3. मूर् n. = मूल *Wurzel* P. 8,2,18, Vārt. 2. या शशाप शपनेन पाघं
मूरमाद्ये AV. 1,28,3. — Vgl. सकूर.

मूर्देव (मूर + देव m. = मूलदेव KĀC. zu P. 8,2,18, Vārt. 2. Bez.
gewisser Unholde: विधीवासा मूर्देवा ऋतु RV. 7,104,24. आ निह-
या मूर्देवात्रभव 10,87,2. 14. = मारणक्रोड SĀJ. Ton wie in शिश्रदेव.

मूरु N. pr. eines Landes As. Res. 3,47. fg. COLEBR. Misc. Ess. II, 29.

मूर्ख (von मूर्क) UṢĀDIS. 3,22. gaṇa भीमादि zu P. 3,4,74. 1) adj. (f. घ्रा)
stumpfsinnig, dumm, unverständig; m. *Dummkopf, Thor* (vgl. स्तब्ध)
AK. 3,1,48. 3,4,18, 108. 26,207. H. 352. HALĀJ. 2,181. 3,56. नरती मूर्खा
TS. 7,1,6,4. M. 4,79. 12,115. SUÇR. 1,94,19. ÇĀK. 27,5. VIKR. 33,2. Spr.
489. 628. 639. 1233. 1263. 1888. 2197. 2222. fgg. 2743. 4734. fgg. VARĀH.
BRU. S. 69,9. BRU. 18,7. 19,5. KATHĀS. 6,80. DHĪRTAS. in LA. 81,3. 86,2.
Verz. d. Oxf. H. 123, a, 20. मूर्खः परापवदिषु न च शास्त्रेषु यो ऽभवत् *un-*
erfahren in KATHĀS. 33,30. In der Stelle क्रियाहीनस्य मूर्खस्य महारो-
गिण एव च । यद्येष्टाचरणासाङ्गमरणात्तमशौचम् ॥ soll मूर्ख angeblich =
गायत्रीरहित oder सार्थगायत्रीरहित nach ÇUBDHIT. im ÇKDR. sein. Am
Ende eines comp. gaṇa खसूच्यादि zu P. 2,1,33. Vgl. मूका^० und मौर्ख्य.
— 2) m. *Phaseolus radiatus* ROZB. TRIK. 2,9,5.

मूर्खता (von मूर्ख) f. *Stumpfsinnigkeit, Dummheit, Thorheit* MRĀKĪH. 113,
3. Spr. 73. 138. 3040. SĀH. D. 7,21. अति^० PAÑKĀT. ed. orn. 48, 12.

मूर्खत्व (wie eben) n. = मूर्खता Spr. 109. 1677. 2742. 4733. VĀDDHA-
KĀN. 2,8. PAÑKĀT. 127,14.

मूर्खभूय (मूर्ख + भूय) n. dass. H. 841, Sch.

मूर्खभानूक s. u. धातर am Ende.

मूर्खलिका f. *ein Pfeil von der Form eines Vogelherzens* VĀTUP. 141.

मूर्खमैन् (von मूर्ख) m. = मूर्खता gaṇa दृढादि zu P. 5,1,123.

मूर्खोभू (मूर्ख + 1. भू) *dumm —, einfältig werden*: भूत KATHĀS. 4,23.

मूर्क (मुर्क), मूर्कति DHĀTUP. 7,32 (मोक्तसमुच्छ्राययोः). P. 8,2,78. मुमूर्क,
अमूर्कति, मूर्कता P. 8,2,78, Sch. मूर्वा P. 6,4,21. partic. मूर्त (s. bes.)
P. 6,4,21. 8,2,57. VOP. 26,88. fg. मूर्कितं gaṇa तारकादि zu P. 5,2,36.
1) *gerinnen, erstarren, fest werden*: दोषा वर्त्मस्वधिकमूर्कितः SUÇR.
2,307, 14. रवेर्दिधितयो मूर्कितः VARĀH. BRU. S. 4,2. Vgl. मूर्त, मूर्ति,
МРАЗЪ (*gelu*), МРАЗНТЪ СЪ (*congelari*), βίγος, *frigus*. — 2) *fest werden*
so v. a. *sich bilden, entstehen* (aus einem weniger dichten Stoff): कृमयो य-
थात्र मूर्कति मूर्कत्यय मत्तिकाद्य (generatio aequivoca) SUÇR. 2,109,4. 373,
3. — 3) *ohnmächtig (starr) —, betäubt werden* DHĀTUP. SUÇR. 1,38, 17. 100,
18. 2,380, 1. 473, 8. GĪR. 4,19. 11,10. PRAB. 67,4. ÇĀTR. 14,208. त्रैका संज्ञा
महावाङ्मूर्मोक्तं च मुमूर्कं च R. 6,72,7. KATHĀS. 33,65. 49,41. 69,9. 71,
253. अमूर्कति BHĀṬṬ. 15,55. मूर्कितं *ohnmächtig, betäubt* AK. 2,6,2, 12.

3,4,14, 85. H. 461. an. 3,287. MED. I. 143. MBH. 1,1284. पपात भुवि मू-
र्कितः R. 2,34,17. R. GONR. 2,66,18. तासां निद्रावशवाच्च मूर्कितानां मदेन
च 5,13,62. विप^० SUÇR. 2,473,13. MRĀKĪH. 128,23. VIKR. 34,17. 67,1.
Spr. 4727. KATHĀS. 10,188. 28,158. 36,25. 67,103. मूर्कितजनाघातेन
किं पौरुषम् GĪR. 3,12. BHĀG. P. 3,30,24. 5,26,15. PAÑKĀR. 1,12,9. PRAB.
47,6. VET. in LA. (II) 6,3. मूर्कितं (impers.) तस्य दारैः RĀGĀ-TAR. 1,373.
— 4) *fest werden, sich verdichten* so v. a. *erstarren, an Umfang ge-*
winnen, intensiver werd-n, Macht bekommen, — haben (समुच्छ्राय)
DHĀTUP. स्वाभाविकं विनीतत्वं तेषां विनयकर्माणा । मुमूर्कं सकृज्जं तत्रो क्-
विषेव क्विर्भुजाम् RAGH. 10,80. तमसां निशि मूर्कताम् VIKR. 48. PRAB. 3,7.
परितोषाय मूर्कते KEMĀRAS. 6,59. वाबन्धस्वोपदेशतः । मुमूर्कं सख्यं रामस्य
क्षौरा RAGH. 12,57. मूर्क्यमी विकाराः प्रायेणैश्वर्यमतेषु ÇĀK. 66,4. तैय-
घोषेण मूर्कता KATHĀS. 16,2. परितो दिगतास्तर्पस्वने मूर्कति RAGH. 6,9
(der Schol. der Calc. Ausg. lässt den acc. दिगतान् von मूर्कति regiert
sein und erklärt dieses durch व्यापुवति). न पादयोन्मूलनशक्ति रंक्तः
शिलोच्चये मूर्कति मारुतस्य *Macht haben* 2,34. त एव मुक्तागुणप्रदयो ऽपि
कुर्येषु मूर्कति न चन्द्रपादाः so v. a. *sind matt* 16,18. क्वाया न मूर्कति
मलोपकृतप्रसादे दर्पणातले ÇĀK. 191. मूर्कितं *dicht, mächtig, stark, intensiv*
(*geworden*), = सोक्त्य AK. 3,4,14, 85. H. an. MED. यदिदं भारतं वर्षं यत्रेदं
मूर्कितं बलम् (Heer) MBH. 6,309. कदम्बाः — संततासारमूर्कितः HARIV.
4383. पशौः प्रासैश्च (प्रासैः पशैश्च die neuere Ausg.) मूर्कितैः 2636. पयो-
धिरिन्द्रदयमूर्कितो यथा *mächtig angeschwollen* SĀH. D. 72, 11. काला-
ग्निरिव मूर्कितः R. 6,73,4. तन्नादं दिनं मूर्कितम् so v. a. *kräftig ertönend*
KATHĀS. 60,21. न मूर्कितः कटुकान्याह so v. a. *aufgeregt* (nicht wenn er
unterliegt) Spr. 4907. क्रोध^० so v. a. *voller Zorn, von Zorn erfüllt* (vgl.
avoir le coeur gros de —) MBH. 3,1864. 3,7243 (= वृद्धि गतः Schol.).
HARIV. 4734. R. 1,1,48. 60,21. 2,98, 1. 6,73,10. शोका^० DAÇ. 2,20. HIT.
123, 18 (शोकेन मूर्कितः ed. JOHNS. 2622). BHĀṬṬ. 6,23 (= मोहं नीतः
Schol.). Am Ende eines comp. überh. *verstärkt durch, erfüllt von, vereinigt*
mit: त्रिफला — त्रिभागघृतमूर्कितं *versetzt mit* SUÇR. 1,167,7. सकृत्कार-
कुसुमकेसरनिकारभरामोदमूर्कितदिग्गत Spr. 3224. — 3) *betäuben* KĀC-
NAP. 34, wo mit Schütz धाने ऽपि मूर्कति zu lesen ist. — 6) *kräftig ert-*
önen lassen: वोषेव मधुरालापा गान्धारं साधु मूर्कती (= मूर्क्यतो Schol.
MBH. 4,515. मूर्कितं n. Bez. einer Art von Gesang: कल्पदायत^० BHĀG.
P. 2,7,33. मूर्कितमालापविशेषयुक्तं गीतम् Schol. — मूर्कितं KĀM. NĪTIS.
wohl fehlerhaft für मुद्रित, wie die v. l. hat.

— *caus. 1) gerinnen machen, festwerden lassen*: इग्धे ब्राह्मिवाव-
वधाय मूर्कयित्वा *Milch gestehen lassen* KĀC. 12. 33. सो ऽद्य एव पुरुषं
समुद्धृत्यामूर्कयत् *formte ihn, gab ihm eine Gestalt* AIR. UP. 1,3. — 2)
betäuben: मधुरापि मूर्कयति या विषविद्यपिसमाश्रिता वल्ली Spr. 3305.
श्लेष्कान्मूर्कयते (dat. partic.) GĪR. 1,16. — 3) *verstärken, aufregen*: तत्
(धनुः) समापे स्थितं भूपस्तेजो मूर्कयते वलात् R. 3,13,14. न मूर्कयेद्यत्र च
पुद्बलेतुः (so die ed. Bomb.) *was nicht aufregt und keine Veranlassung*
zum Kampfe giebt MBH. 3,684. NILAK. erklärt das Wort durch वर्धयेत्
und ergänzt dazu क्रोधम्. — 4) *ertönen lassen*: देवदत्तामिसो वीणाप-
— मूर्कयित्वा BHĀG. P. 1,6,33. = मूर्कनालापवतो कृत्वा Schol.

— अभि, partic. मूर्कितं *verstärkt*: पानोद्मा पितरक्ताभिर्मूर्कितः SUÇR.
2,484,6. *aufgeregt*: कन्दर्पेण MBH. 1,7794.